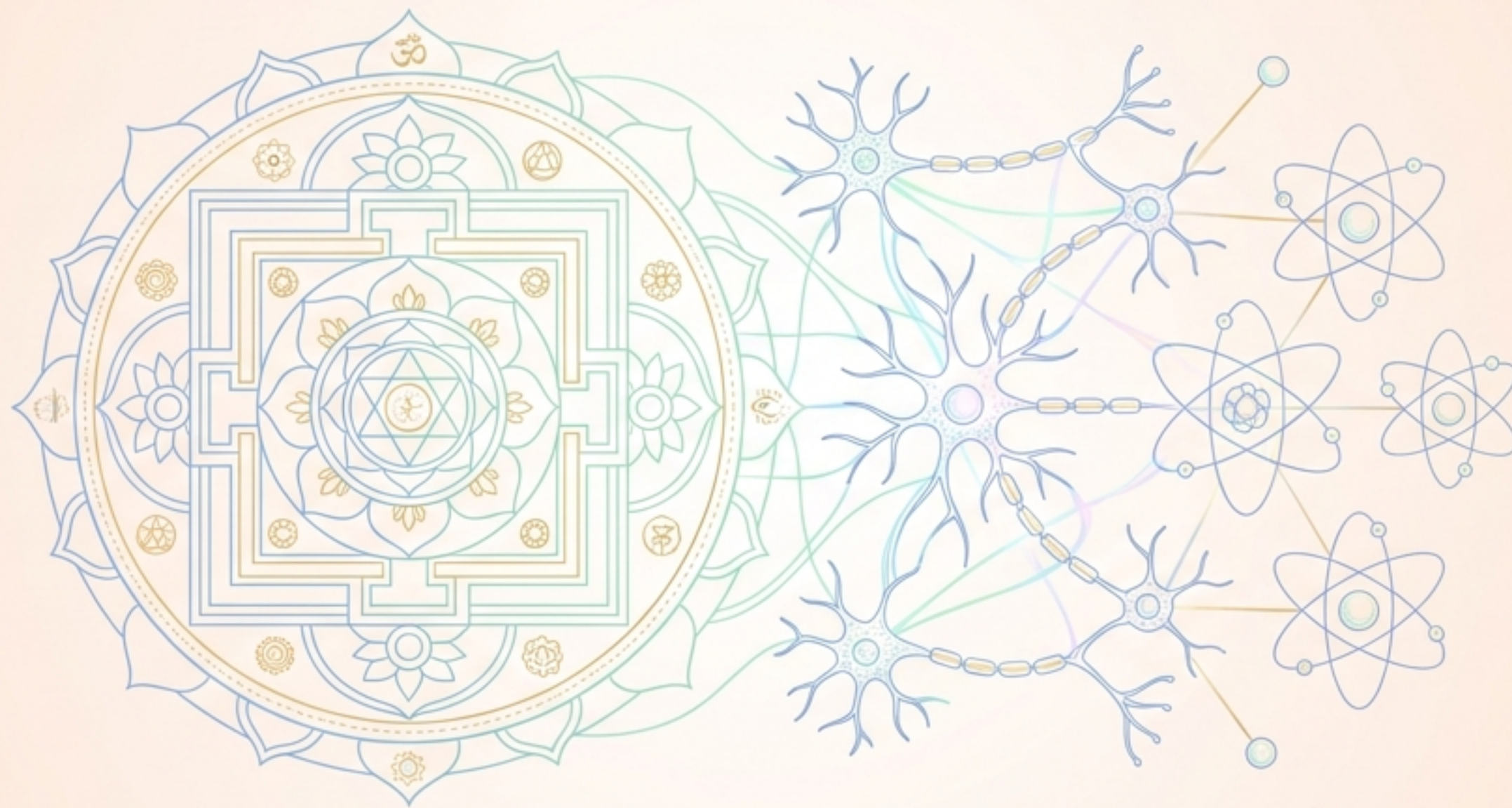


जीवन साधना के स्वर्णिम सूत्र

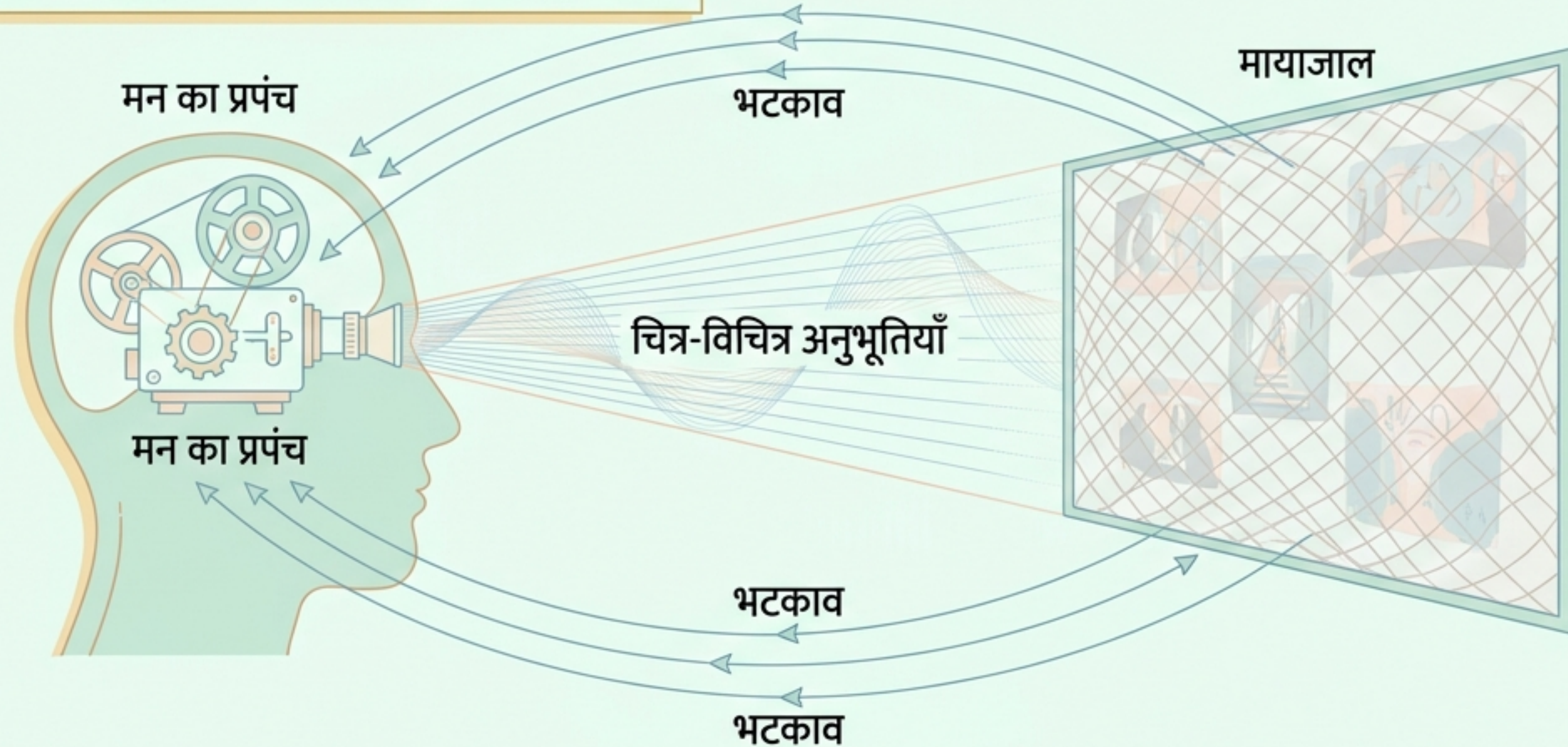
चेतना और महानता का विज्ञान (अध्याय १-४ का सार)



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुमूषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

मायाजाल: भटकाव का मनोविज्ञान

हम उस सिनेमा के पर्दे पर रोते-हँसते हैं, जो स्वयं हमारे ही मन (प्रोजेक्टर) द्वारा रचित है।



प्रकृति का खेल मात्र पंचतत्त्वों का हेर-फेर है।

आम आदमी बेतुकी कल्पनाओं में उलझकर अपनी सुध-बुध खो बैठता है।

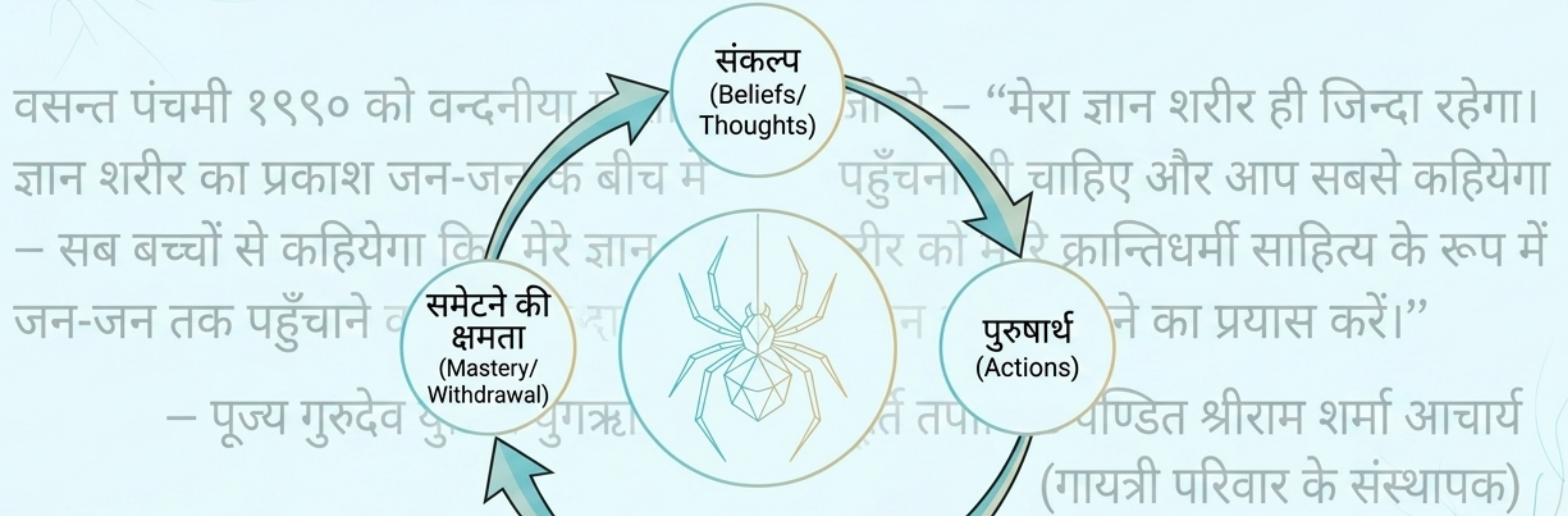
समझदारी: इस दिवास्वप्न से आँखें खोलना।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

स्व-निर्मित दुनिया: मकरी का जाल और भाग्य चक्र

मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता आप है।

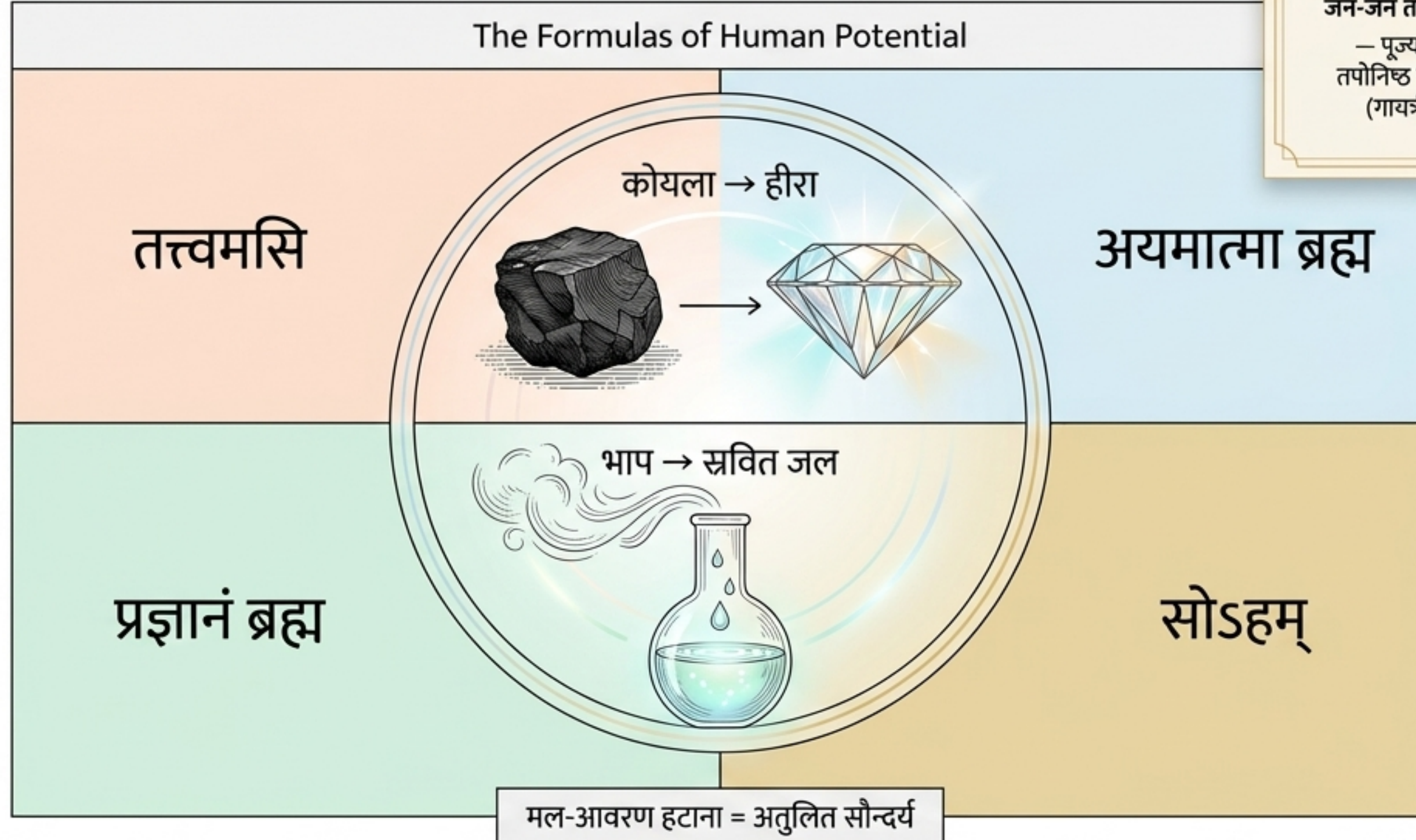


जैसे मकड़ी अपना जाल स्वयं बुनती है और समय आने पर उसे समेट कर मुक्त हो जाती है, वैसे ही हर मनुष्य अपने स्तर की दुनिया अपने हाथों रचता है। दूसरों पर दोषारोपण व्यर्थ है।

अद्वैत विज्ञान: महानता केवल परिष्कृत सम्भावना है

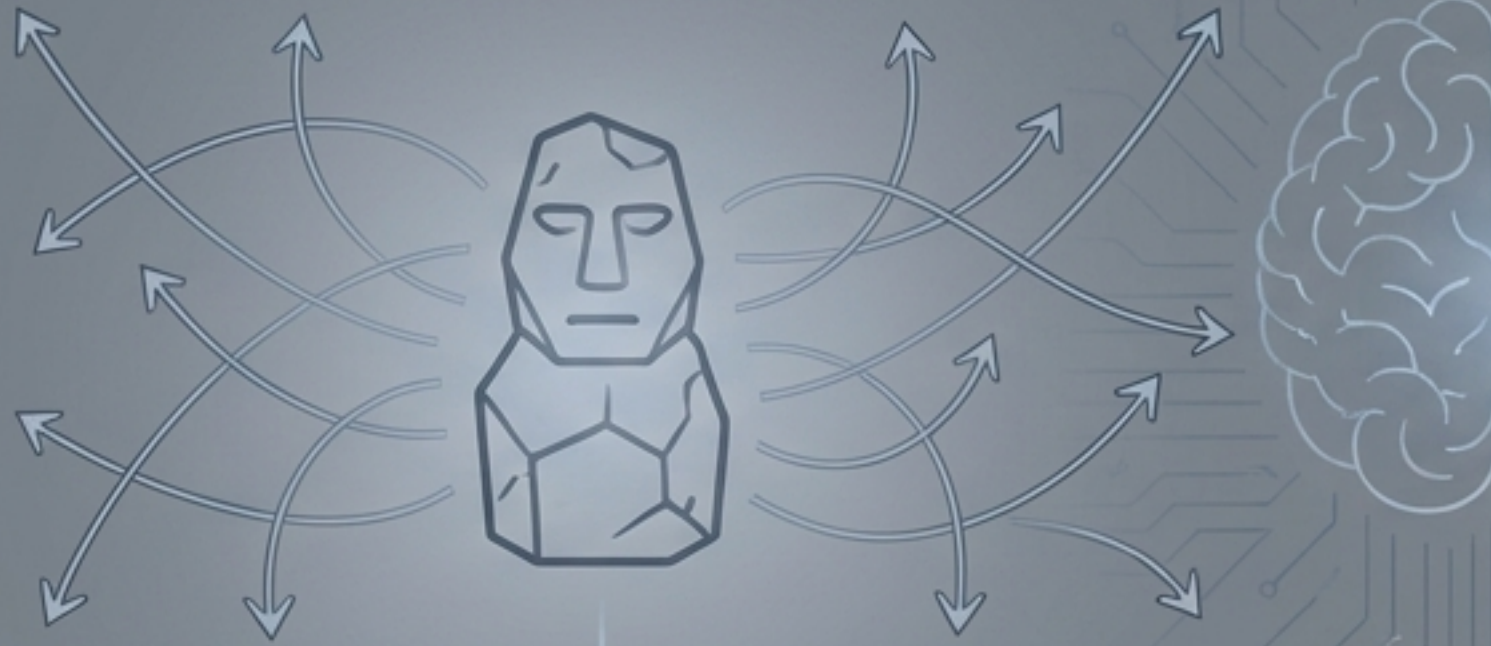
चारों सूत्रों का एक ही अर्थ है — परिष्कृत जीवात्मा ही परब्रह्म है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)



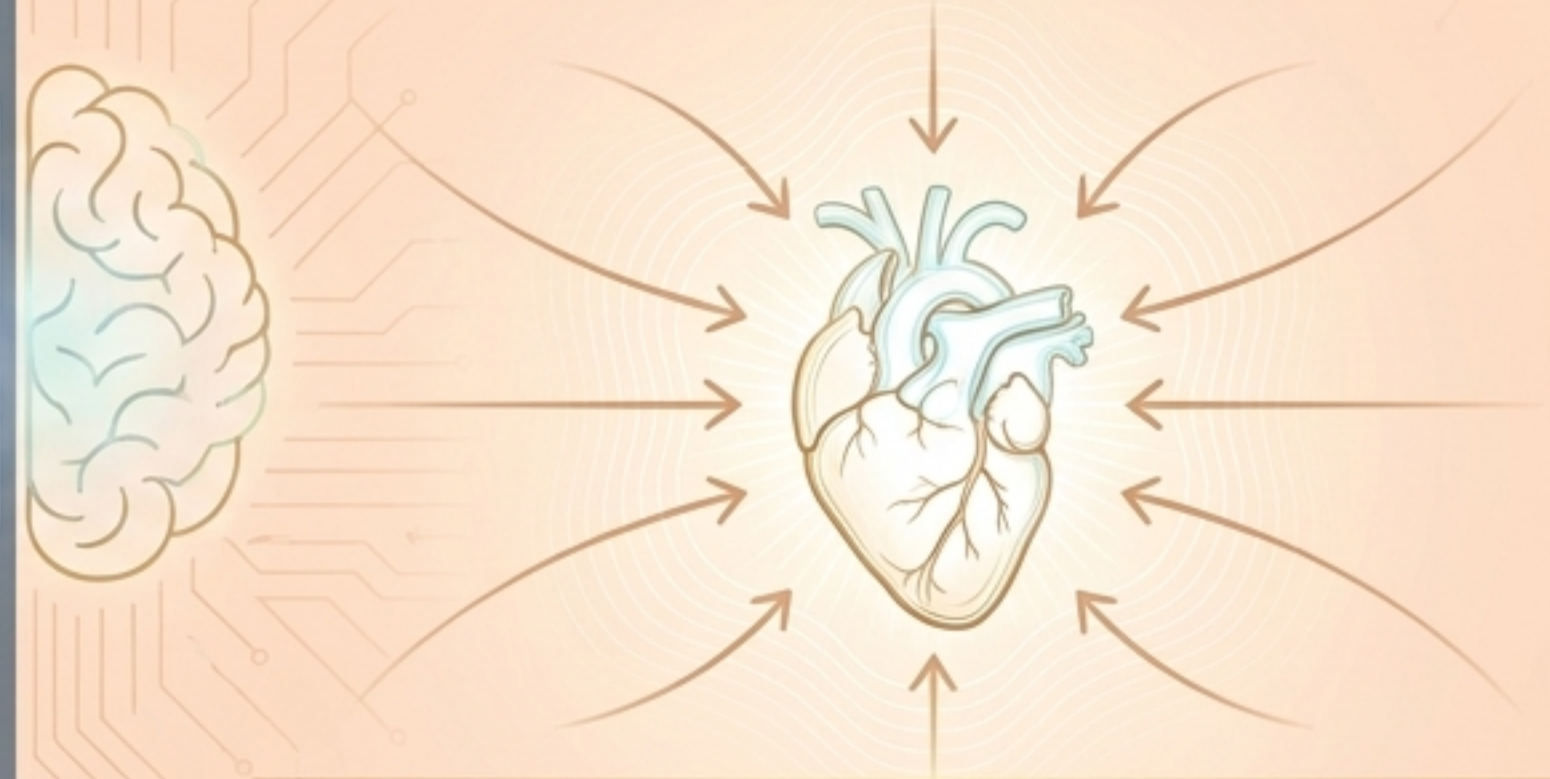
जड़ बनाम चेतन: ईश्वरीय ऊर्जा का सही पता

जड़ (External)



- बाहरी खोज
- ईश्वर को जड़ और प्रतिमाओं तक सीमित मानना।
- भावुकता और काल्पनिक उड़ानें।

चेतन (Internal)



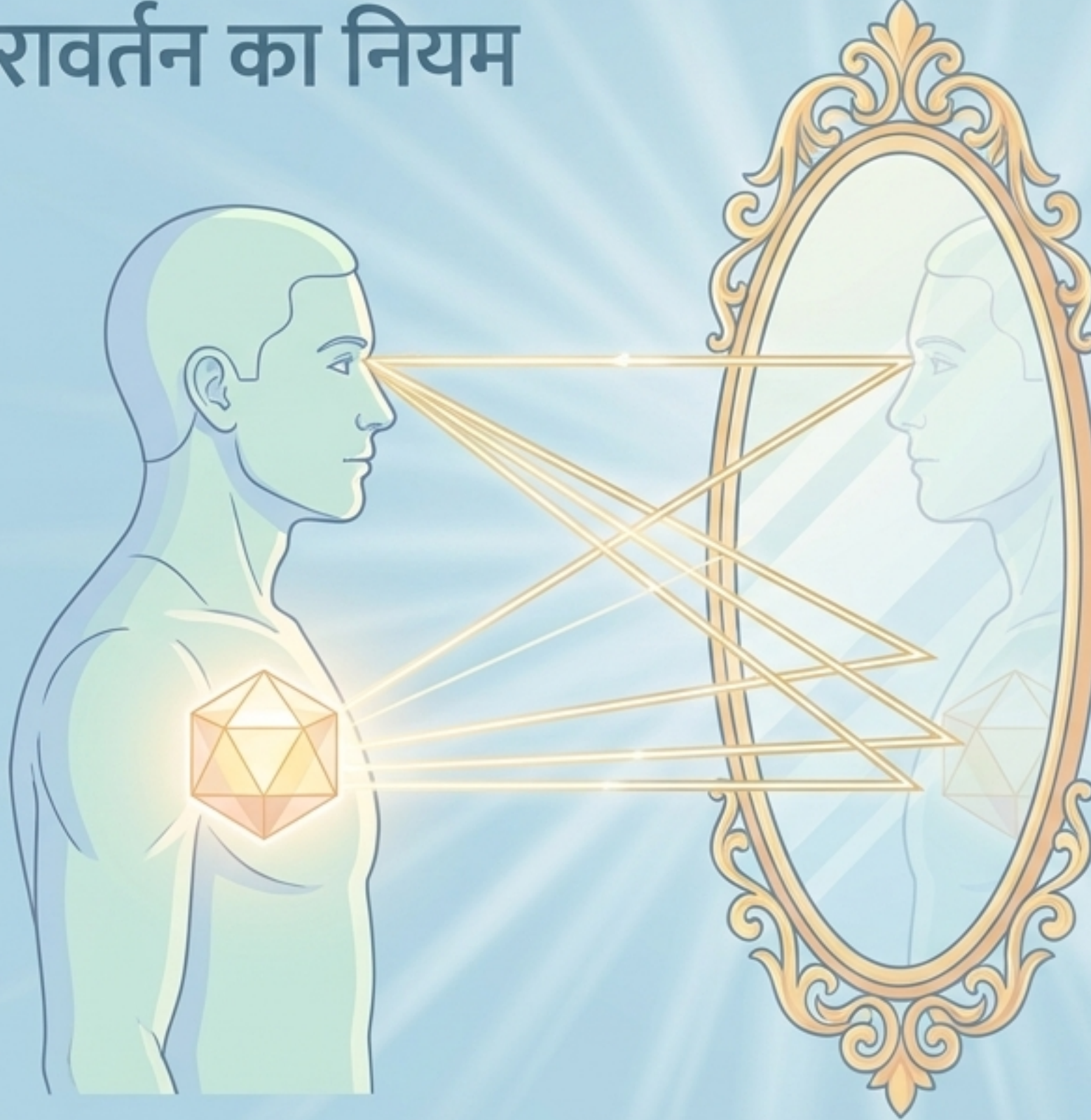
- आंतरिक खोज
- ईश्वर चेतन है। यह चेतना के साथ दूध-पानी की तरह घुल-मिल सकता है।
- अन्तःकरण ही सबसे निकटवर्ती और सुनिश्चित स्थान है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में जिन्दहेगा
आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर कब बच्चों से कहियेगा
जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

सूफी संत का दर्पण: परावर्तन का नियम

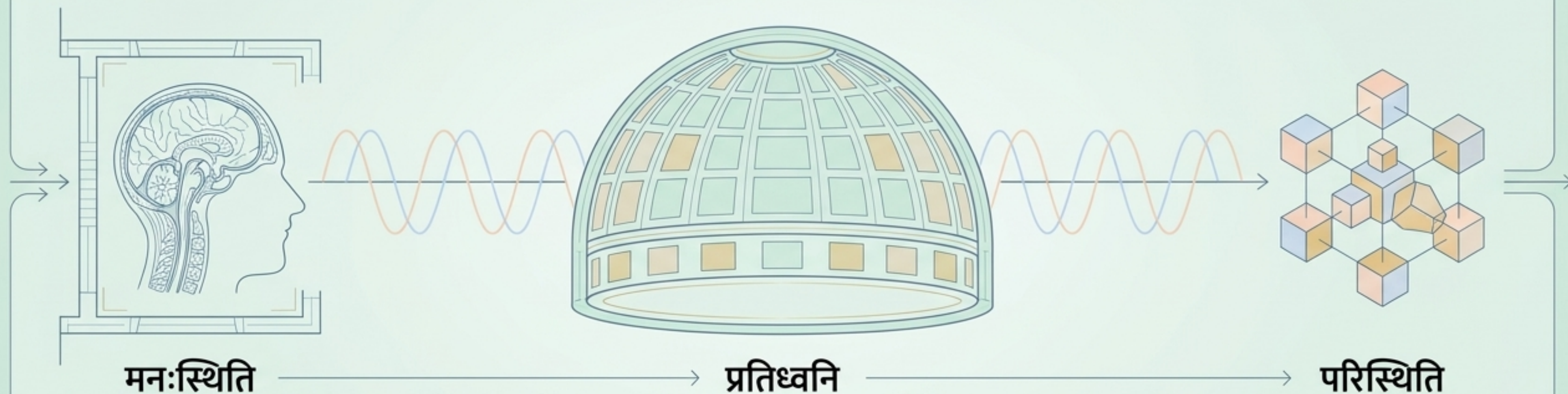


कहानी: सूफी सन्त ने मन्दिर में
प्रतिमा के स्थान पर एक
विशालकाय दर्पण प्रतिष्ठित
करने को कहा।

विज्ञान: स्वयं की छवि दर्शकों
को बोध कराती है कि ईश्वर
उनके भीतर ही विद्यमान है।
परिष्कृत आत्मसत्ता ही परमात्म
सत्ता में विकसित होती है।

अनुनाद का विज्ञान: मन:स्थिति ही परिस्थितियों की जन्मदात्री है

यह संसार गुम्बज की तरह अपने ही उच्चारण को प्रतिध्वनित करता है।
यह संसार गुम्बज की तरह अपने ही उच्चारण को प्रतिध्वनित करता है।



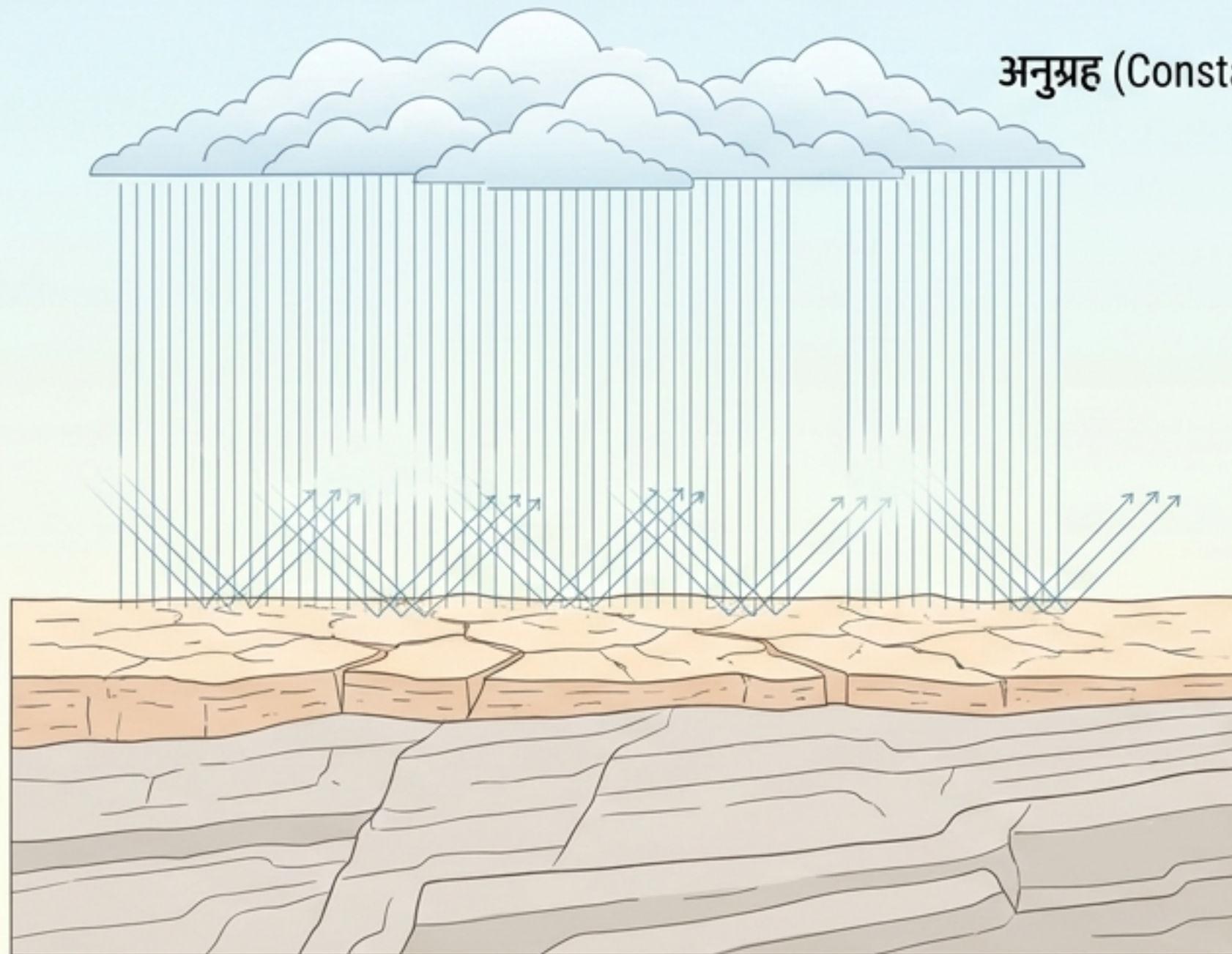
बाहरी सहायता खोजने की अपेक्षा अपनी भावना, मान्यता, और विचारणा
को परिष्कृत करना ही एकमात्र सुनिश्चित मार्ग है।

मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

पात्रता का सिद्धांत: ग्रहणशीलता का विज्ञान

बादल बरसते सभी जगह समान रूप से हैं, पर पानी वहीं जमा होता है जहाँ गहराई या 'पात्रता' होती है।

अनुग्रह (Constant & Universal)



रेगिस्तान और चट्टान (Zero Capacity)



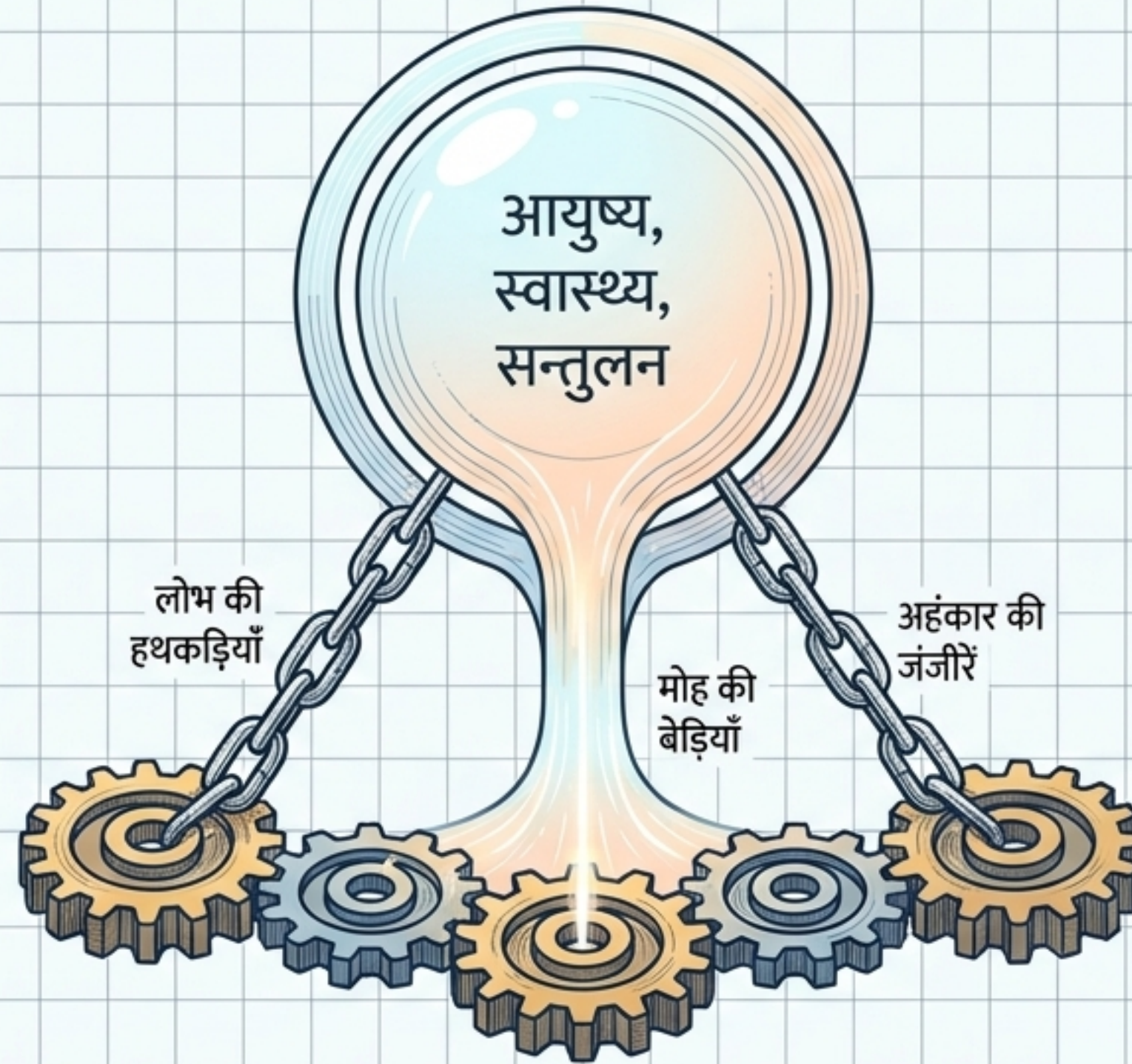
पात्रता (Variable & Self-Created)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश
जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा
— सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे कान्तिधर्म
साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगक्रषि वेदवूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

ईश्वर का कोई पक्षपात नहीं, हमारी अनुर्वरता ही जिम्मेदार है। धुलाई के बिना रँगाई नहीं निखरती।

अवनति की जंजीरें: ऊर्जा का क्षरण (Entropy)

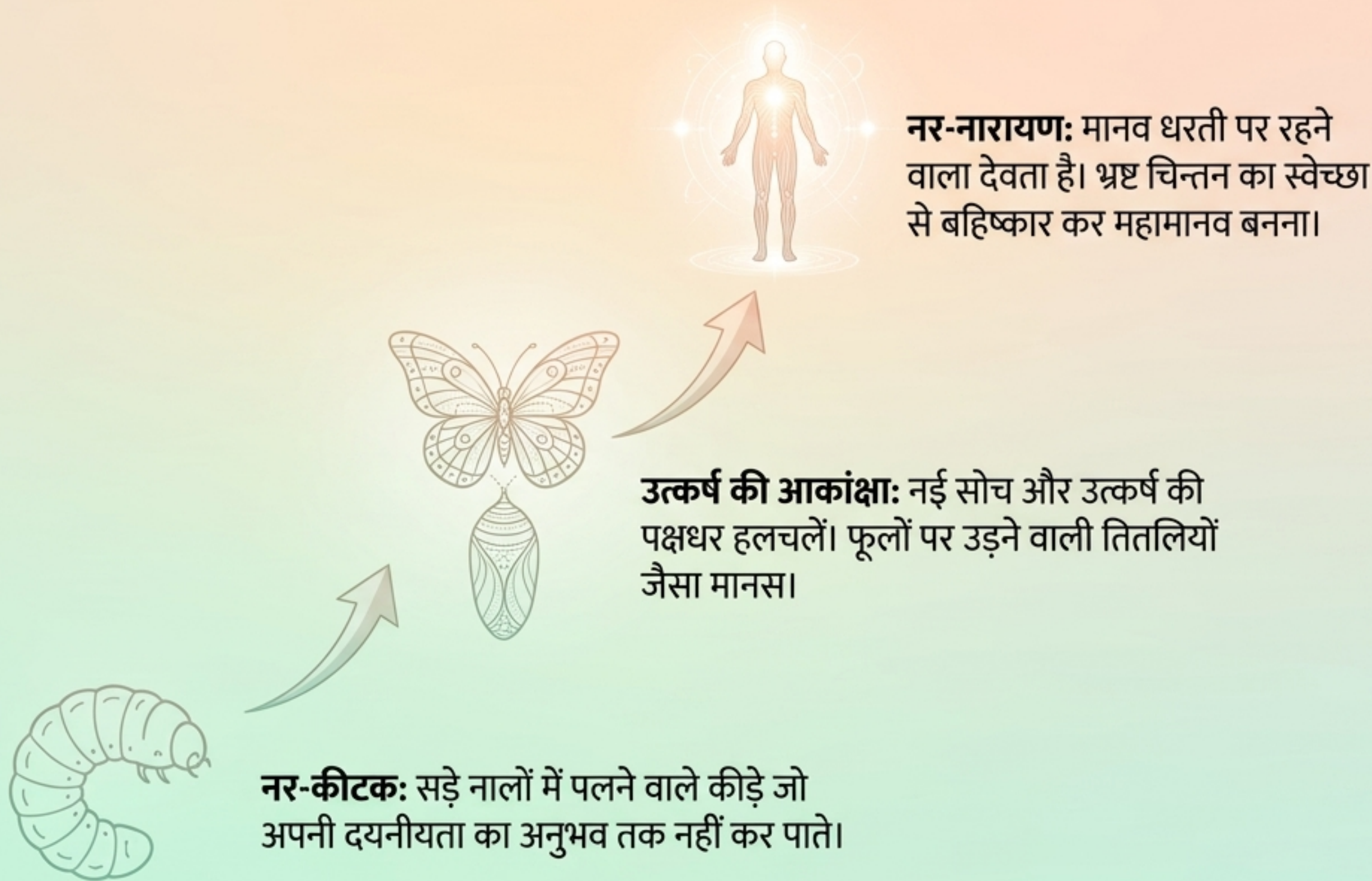


‘The Effect’

- वासनाएँ आदमी को नीबू की तरह निचोड़ लेती हैं।
- जीवन से स्वास्थ्य और सन्तुलन निचोड़ कर निस्तेज छिलका बना देती हैं।
- कठपुतलियों की तरह हम अपना मौलिक पराक्रम गवाँ बैठते हैं।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गावत्री परिवार के संस्थापक)

कायाकल्प: नर से नारायण तक की विकास यात्रा



वसन्त पंचमी १९९० को
वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही
जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर
का प्रकाश जन-जन के
बीच में पहुँचना ही चाहिए
और आप सबसे कहियेगा –
सब बच्चों से कहियेगा कि
मेरे ज्ञान शरीर को मेरे
क्रान्तिधर्मी साहित्य के
रूप में जन-जन तक पहुँचाने
का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव

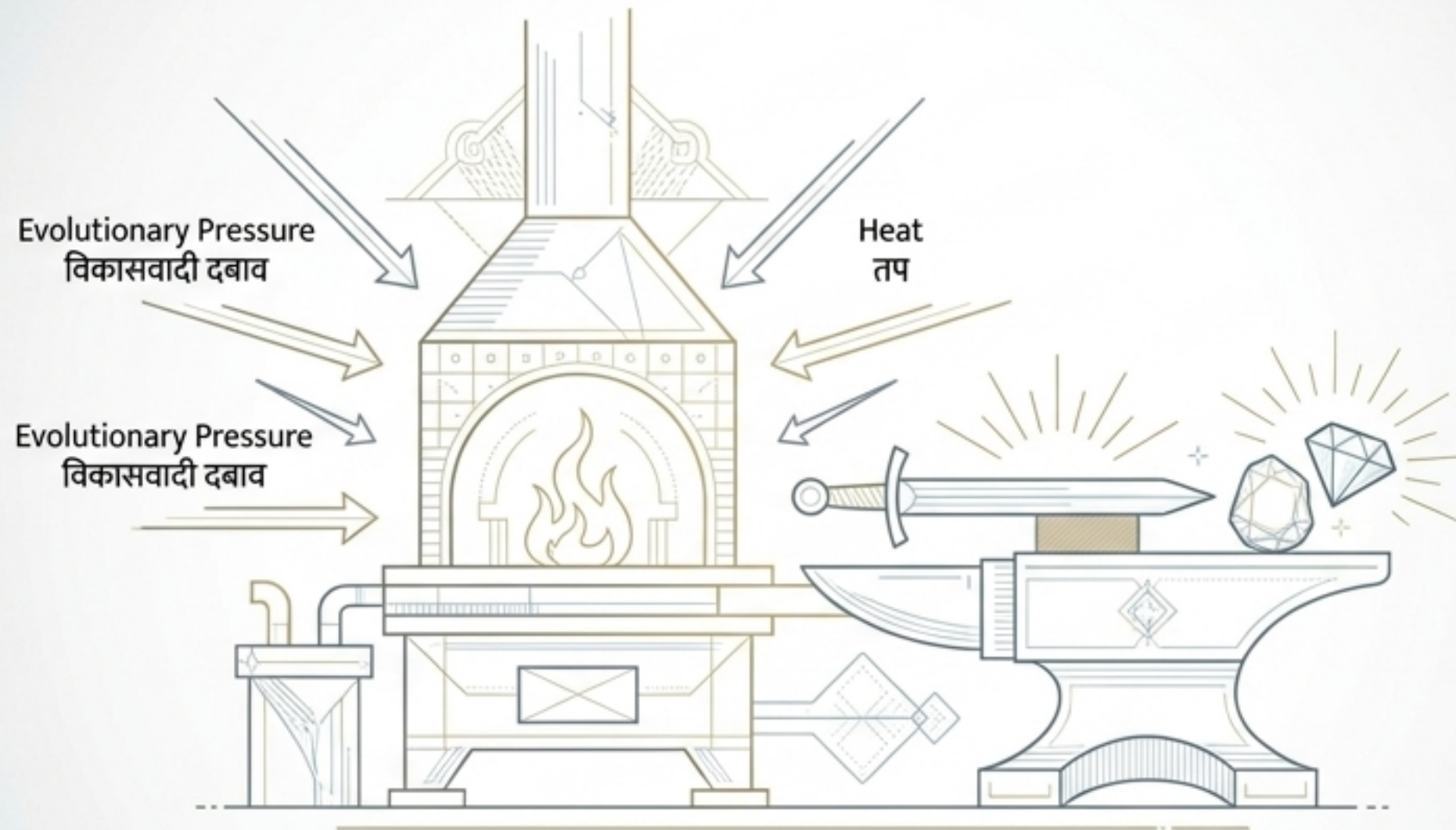
युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ
पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को
वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान जब युद्ध सिर पर आता है, तो मालखाने से निकाल कर तलवारों पर नये सिरे से धार धरी जाती है। विवाह-शादी में जेवर चमकाए जाते हैं। ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

युग-सन्धि काल: प्रतिभाओं के निखार की भट्टी



विकासवादी नियम

♦ वर्तमान आपत्तिकाल में व्यक्तित्वों की टूट-फूट को सुधारा जाना चाहिए।

♦ बीमारियों और तूफानों से वे ही बच पाते हैं, जिनकी जीवनी शक्ति (Immune System) सुदृढ़ होती है।

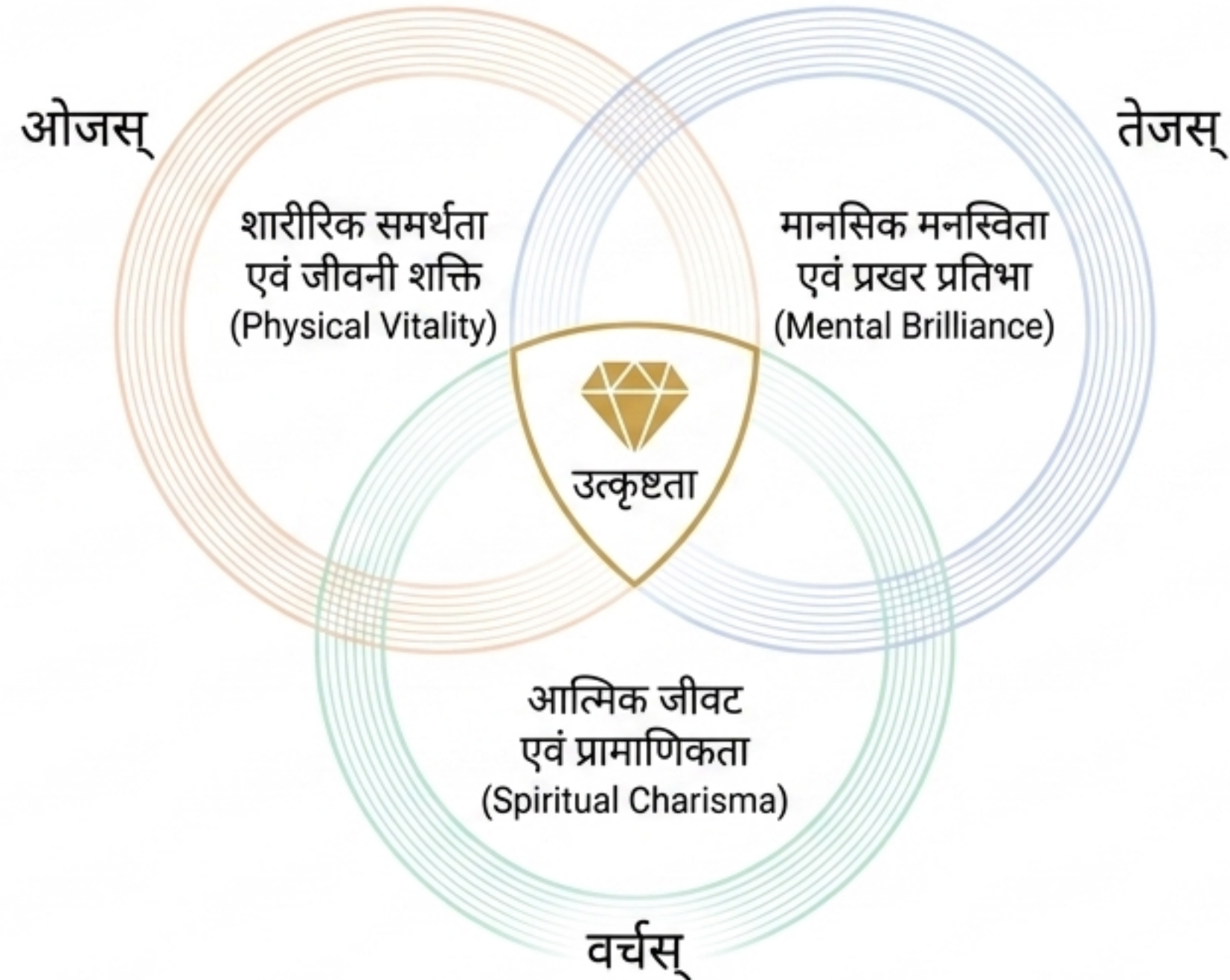
♦ नये युग के अनुरूप नया मनुष्य बनने की होड़।

वसन्त पंचमी १९९० को
वन्दनीया माताजी से —

ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

उत्कृष्टता का ऊर्जा-विज्ञान: दिव्य सम्पदा



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से –
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचाना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

– पूज्य गुरुदेव युगऋषि
वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

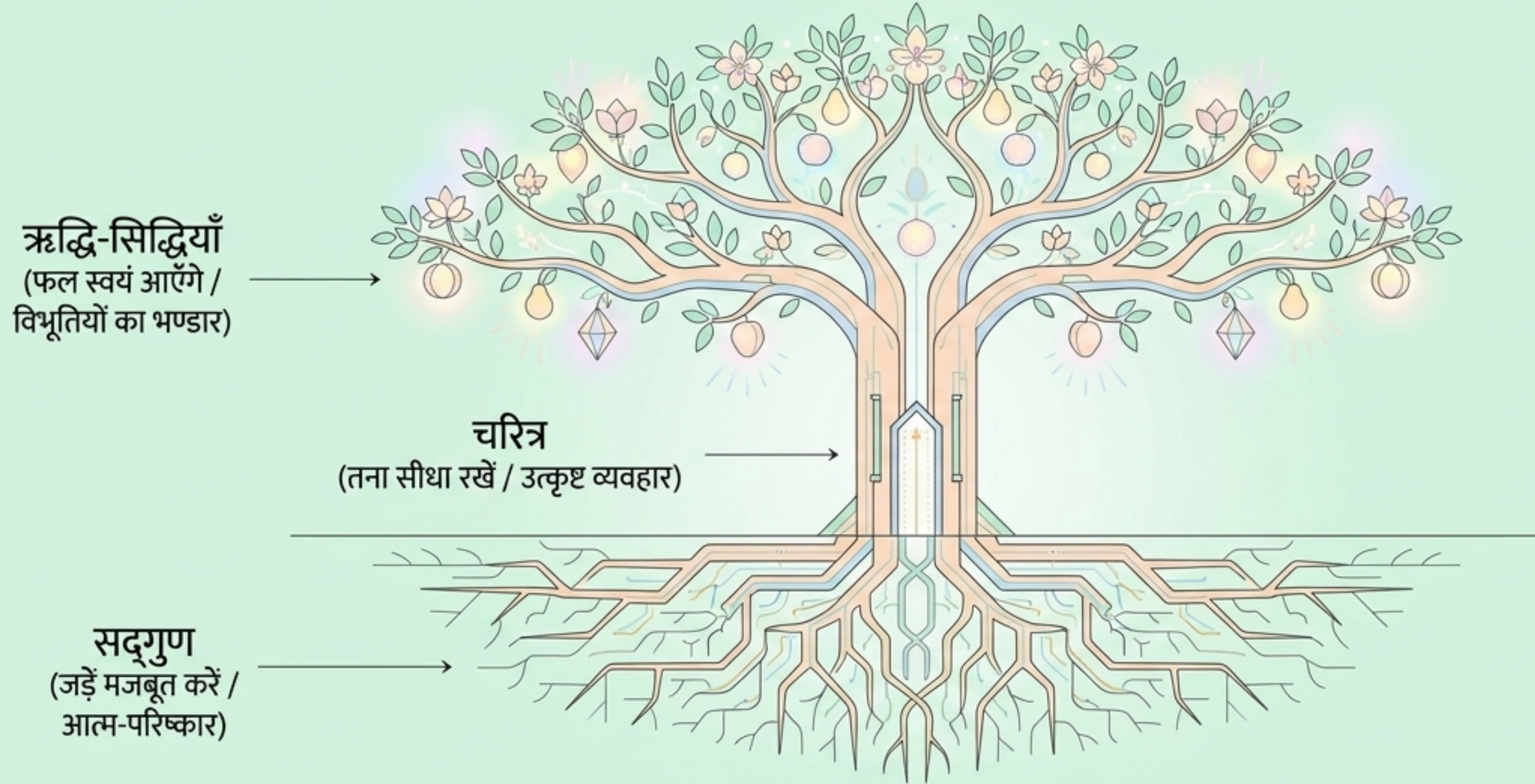
Institutional Seal

Core Formula:

यही वह दिव्य सम्पदा है, जिसके बदले संसार के हाट-बाजार से कुछ भी मनचाहा खरीदा जा सकता है।

जीवन ही कल्पवृक्ष है: प्रत्यक्ष चमत्कार का विज्ञान

एक देवता ऐसा भी है जिसकी साधना करने पर सत्परिणाम 'नकद धर्म' की तरह हाथों-हाथ मिलते हैं। वह देवता है — हमारा जीवन।



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संरक्षक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और हा सबसे कहियेगा को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोविष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

चेतना के जागरण का समग्र मानचित्र



नया युग, नया मनुष्य: विचारशीलता की गुणन प्रक्रिया

नर-पामरों से ऊँचे उठकर, विचारशीलता के दृष्टि से परिष्कृत बनें।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)



गुणन के नियम:

- “अपने परिष्कार के बाद, 4 और साथी ढूँढ़ें।”
- “उन्हें भागीदार बनाकर युग मानवों का ‘पंचायतन’ विनिर्मित करें।”
- “विवेक-विस्तार” ही महाकाल की चुनौती और युग-धर्म है।”